पाणिनी कालीन गणराज्यों पर प्रकाश डालें

(12) Q:- Give an account of the Republican states mentioned by Panini. ?

Ans:- पाणिनी ने ई० पू० 500 के लगभग चारों ओर वाले गणराज्यों की विस्तार रूप से चर्चा की है। इससे स्पष्ट होता है कि गणराज्यों का स्वरूप उस काल में अत्यन्त महत्वपूर्ण था। पाणिनी द्वारा रचित अष्टाध्यायी यद्यपि एक व्याकरण का ग्रन्थ है किन्तु उसमें प्रसंगवश गणतंत्रों के विषय में भी अनेक महत्वपूर्ण बातें बतलाई गई हैं। डा० जायसवाल ने पाणिनि के काल को 500 ई० पूर्व में लगभग माना है। पाणिनि ने संघ शब्द के विभिन्न रूप बनाने के नियमों का उल्लेख किया है इससे स्पष्ट होता है कि पाणिनी के समय लोग प्रजातंत्र को अधिक महत्व देते थे।

कौटिल्य की भाँति ही पाणिनि ने भी गणराज्य के लिये संघ शब्द का उपयोग किया है। संघ पाणिनि के अनुसार एक पारिभाषिक शब्द है जिससे राजनीतिक संघ का कम बोध होता है। दूसरे शब्दों में संघ गण या प्रजातंत्र है। संघ के अन्तर्गत विभिन्न जातियों के लोग सम्मिलित रहते थे।

संघों का विभाजन :- अपने व्याकरण में पाणिनि ने दो प्रकार के संघों का उल्लेख किया है। (1) आयुधजीवी संघ (2) अन्य संघ

आयुधजीवी संघ :- पाणिनि के अनुसार आयुधजीवी संघों का अभिप्राय उन संघों से है जो युद्ध काल की निपुणता को प्रमुख सिद्धान्त मानते थे। आयुधजीवी संघ के अन्तर्गत पाणिनि ने निम्नलिखित संघों का उल्लेख किया है।

(i) वृक (ii) दामिनी (iii) त्रिगर्त षष्ठ अथवा छः त्रिगर्तों का समूह जिनके नाम निम्न प्रकार हैं – कौंडोपरथ, दाण्डकी, कौष्टकी, जालमानि, ब्रह्मगुप्त और जानकी (iv) यौधेय और (v) पर्शु आदि।

उपर्युक्त प्रजातंत्र पाणिनि के अनुसार वाहीक देश में स्थित थे। डा० जायसवाल के अनुसार 'वाहीक' का अर्थ है नदियों का प्रदेश और इस देश में वाहीक देश के अन्तर्गत सिंध और दोनों होने चाहिए।

इसके अतिरिक्त पाणिनि ने जिन छः त्रिगर्त का उल्लेख किया है उन्हें डा० जायसवाल ने पंजाब में जम्मू और कांगड़ा के आसपास माना है। छः गणतंत्रों का संघात होने के कारण इन्हें त्रिगर्त षष्ठ कहा गया है। महाभारत में भी त्रिगर्त का उल्लेख आया है इन्होंने अपनी मुद्रायें प्रचलित की थी। जिनमें त्रिगर्त जनपदस्य अंकित रहता था।

(II) अन्य संघ :- उपर्युक्त सैनिक प्रजातंत्रों के अतिरिक्त पाणिनि जिन अन्य संघों का उल्लेख किया है उनके नाम निम्न प्रकार हैं।

(i) मद्र (ii) वृजि (iii) राजन्य (iv) अंधक, वृष्णि (v) महाराज और (vi) भर्ग।

उपर्युक्त संघों में मद्र पंजाब में स्थित था इसकी

Scanned with CamSc

राजधानी शाकल थी। मद्र लोगों ने शाकल के आसपास के प्रदेशों का नाम मद्र रखा था। ऐतिहासिक विवरण के अनुसार ये लोग समुद्रगुप्त के साथ लड़े थे। अपने सिक्कों में मद्र लोग अंक चिह्नों का प्रयोग करते थे।

वृजि अथवा वृजी संघ का उल्लेख बौद्ध साहित्य में मिलता है। पाणिनि के अनुसार इसने अपना एक संघ बना रखा था।

इसी प्रकार राजन्य लोगों का भी संघ बड़ा विख्यात था। राजन्य शब्द का पाणिनि ने एक विशिष्ट राजनैतिक वर्ग को दर्शाने के लिए प्रयुक्त किया है। इसके सिक्के उत्तरीय को अधिक महत्व दिया जाता था।

पाणिनि ने महाराज जनपद का भी उल्लेख किया है। इसके सिक्कों में 'महाराज जनपदस' लिखा रहता था किन्तु बाद में विदेशी शासकों के प्रभाव से इनके अधिकार समाप्त हो गए।

इसी प्रकार पाणिनि द्वारा वर्णित अन्धक वृष्णि गणराज्य जिन्हें पाणिनि ने संघ राज्य कहा है। अत्यन्त प्रसिद्ध गणराज्य थे। महाभारत में इन दोनों के संघात (League) का उल्लेख किया गया है। महाभारत काल में अंधकों में राजतंत्र शासन व्यवस्था प्रचलित थी तथा यहाँ के शासक भोज कहलाते थे। महाभारत से पता चलता है कि वृष्णियों में कोई राजा नहीं होता था अर्थात वहाँ गणतंत्र व्यवस्था रही होगी।

कौटिल्य ने भी इस वृष्णि संघ का उल्लेख किया है। कृष्ण वृष्णियों के नेता थे क्योंकि महाभारत में एक स्थान पर यह उल्लेख आया है कि कृष्ण को वृष्णियों के नेता के रूप में कौन-कौन सी कठिनाइयों का सामना करना पड़ा।

उपर्युक्त संघों के अतिरिक्त पाणिनि के अनुसार मालव संघ भी अत्यन्त महत्वपूर्ण है। मालव क्षुद्रकों के पड़ोसी थे जिनका निवास स्थान चिनाब और रावी के मध्य तथा उसके दक्षिण के प्रदेश में था। मालवों ने यूनानियों का डटकर सामना किया था। इनका उल्लेख महाभारत में भी आया है।

पाणिनि ने आर्जुनायन गणराज्य का भी उल्लेख किया है इसकी स्थिति वर्तमान आगरा, मथुरा प्रदेश निश्चित की जाती है। इसका अन्त 400 ई० के लगभग हुआ इनकी ई०पू० 100 की मुद्रायें प्राप्त हुई हैं जिनमें आर्जुनायनानाम् लेख अंकित है।

एक अन्य संघ कुरु का उल्लेख पाणिनि के सूत्र 124 अ० 1 पाद 4 में अंकित किया गया है किन्तु पाणिनि के उल्लेख से यह स्पष्ट नहीं होता है कि कुरु उस समय गणराज्य था अथवा राजतंत्रात्मक। महाभारत के समय यहाँ राजतंत्रात्मक शासन व्यवस्था थी।

Scanned with CamSc

कौटिल्य ने इसका उल्लेख राजशब्दोपजीवी संघों की श्रेणी के अन्तर्गत किया है। ऐसा प्रतीत होता है कि बौद्ध काल में कुरु वंशाति-कल हो गया होगा और उसके कुछ समय के पश्चात् कुरुराज्य गणराज्य में परिणत हो गया होगा। जो कौटिल्य के समय में गणराज्य के रूप में चल रहा होगा।

पाणिनि के अनुसार प्रजातंत्रों का शासन :- पाणिनि के वर्णन से प्रजातंत्रों के दो विभागों का संकेत मिलता है। एक प्रजातंत्र तो वह होता था जिसके छोटी और बड़ी प्रतिनिधि सभायें होती थी। और दूसरा वह जिसके केवल प्रतिनिधि सभायें होती थी। पहली तरह के प्रजातंत्र के लिए पाणिनि ने एककर्मधर्म शब्द का व्यवहार किया है और इसके संबंध में यह नियम दिया है कि जो संघ इस प्रकार का होता था वह ~~संघ~~ काय या निकाय कहलाता था जिसका अर्थ होता है एक शरीर।

पाणिनि के वर्णन से तत्कालीन गणराज्य के विषय में निम्न बातें प्राप्त होती हैं।

(1) जनपद के निवासी तीन श्रेणी में विभक्त थी वे निवासी जिनको उस जनपद के प्रति भक्ति (allegiance) हो दूसरे वे निवासी जो कि वहां रहते हैं तथा तीसरे [illegible] आये हैं। मद्र एवं वृजि जनपद नागरिकों को दो कोटि में विभक्त किया जा सकता था वे जो इन जनपदों के सदस्य होते थे तथा दूसरे वे जो इनके प्रति भक्ति तो अवश्य रखते थे किन्तु जिनका इनसे कोई संबंध नहीं था। महाराज जनपद के प्रति भक्ति रखने वाला नागरिक महाराजिक कहलाता था। डॉ. पाणिनि के अनुसार "किसी देश या जनपद की नागरिकता प्राप्त करने के तीन साधन थे। विवाह द्वारा, अभिजन के कारण और भक्ति के आधार पर"।

(2) कुछ जनपद ऐसे भी थे जहाँ जन निवासी शासन की दृष्टि से समान महत्व नहीं रखते थे।

(3) पाणिनि ने ऐसे संघ जनपदों का उल्लेख किया है जिन्हें कुल तंत्र के नाम से सम्बोधित किया जा सकता है। (कुल तंत्र का आशय 'Oligarch' से है) इस प्रकार के जनपदों की शासन सभा में हर कुल का केवल एक व्यक्ति ही उपस्थित हो सकता था।

(4) संघ जनपदों के शासनाधिकारी राजा नहीं समझे जाते थे क्योंकि राजाओं के समान उनका अभिषेक नहीं होता था।

(5) पाणिनि के नियम 4/3/127 से यह स्पष्ट होता है कि संघ जनपदों के अपने-अपने अंक तथा लक्षण भी होते थे। दोनों का ही आशय चिन्ह से ही इन अंक तथा लक्षणों का प्रयोग

Scanned with CamSc

मुद्राओं तथा पताकाओं में किया जाता था। इस संबंध में डा० जयस्वाल कहते हैं " मैं तो यह समझता हूँ कि ये अंक वही चिह्न हैं जो समय-समय पर बदलती रहनेवाली सरकारें अथवा राज्य धारण किया करते थे। जब कोई विशेष अंक निर्धारित करता था और जब वह अधिकार च्युत हो जाता था। तब उसका अंक परित्यक्त कर दिया जाता था।

" The Anka, it seems to me refers to symbols adopted by changing governments. An elected rule on body of rulers adopted their own special Anka which was given up when these officers went out of office.

(Meaning of Ayudhjivi Sangha) आयुधजीवी संघ का आशय — जैसा ऊपर कहा जा चुका है कि पाणिनि ने दो प्रकार के संघों का उल्लेख किया है— आयुधजीवी तथा अन्य। यहाँ पर आयुधजीवी का अभिप्राय समझ लेना आवश्यक है। पाणिनि के आयुधजीवी संघ की तुलना कौटिल्य के शस्त्रोपजीवी संघ से की जा सकती है। इस संबंध में डा० श्यामलाल पाण्डेय का कथन है " ऐसा ज्ञात होता है कि [illegible] में वर्णित वह शस्त्रोपजीवी संघ [illegible] शिपित आयुधजीवी संघों के समान ही था। जिनमें प्रत्येक प्राप्त वयस्क (Major) नागरिक को सैनिक शिक्षा अनिवार्य रूप से प्राप्त करनी पड़ती थी"। अतः आयुधजीवी संघ वे होते थे जो कि युद्ध कला को अत्यधिक महत्व देते थे तथा उसमें निपुण होते थे। क्षुद्रक और मालव ऐसे ही संघ थे। मालवों के पास एक लाख सैनिक थे। इनकी युद्ध विद्या की यूनानी लेखकों ने अधिक प्रशंसा की है।

The Ended.